International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 161-164
www.educationjournal.info
Received: 03-02-2023
Accepted: 07-03-2023

कृष्ण कुमार सिंह
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

डॉ. रंजना तिवारी
विभागाध्यक्ष शिक्षा, श्रीयुत्त स्नातकोत्तर कालेज, गंगेव, जिला रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
कृष्ण कुमार सिंह
शोध छात्र शिक्षा, लाइफ लॉंग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

रीवा जिले के शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध का अध्ययन

कृष्ण कुमार सिंह एवं डॉ. रंजना तिवारी

सारांश
इस शोध पत्र के द्वारा शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध का अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श के रूप में चयनित रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 2–2 शिक्षा महाविद्यालय कुल 18 महाविद्यालयों, प्रत्येक महाविद्यालयों से 5–5 शिक्षक कुल 90 शिक्षक, प्रत्येक महाविद्यालय के प्राचार्य तथा प्रत्येक महाविद्यालय से 10–10 महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थी कुल 360 का चयन का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। न्यादर्श में चयनित कुल 468 अभिमतदाताओं में से 71.79 प्रतिशत अभिमत है कि शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित ननवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में वृद्धि हो रही है। शोध क्षेत्र के ग्रामीण शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में सार्थकता का औसत उपलब्धि 27.22 है तथा मानक विचलन 11.33 है और शहरी शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में सार्थकता का औसत उपलब्धि 28.33 है तथा मानक विचलन 12.11 है।

कूट शब्दः रीवा जिला, शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, नवाचार, शिक्षक, दायित्व बोध, प्रशिक्षण

1. प्रस्तावना
शिक्षा मनुष्य को अज्ञात तत्वों से परिचित कराकर उसे अनेक जटिल रहस्यों को समझने के योग्य बनाती है। अर्थात उसे ज्ञानवान, चिंतक, विचारक तथा अभिव्यक्ति की क्षमता से युक्त बनाती है। शिक्षा मनुष्य के उन सभी नैतिक आदर्शों को स्थापित करने का कार्य करती है, जो उसे सही अर्थों में सामाजिक प्राणी के रूप में मान्य करने हेतु आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य को मानव के रूप में परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ही करती है।
ज्ञान के सतत् विकास तथा राष्ट्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु अध्यापक शिक्षा का नवाचारी एवं प्रगतिशील बदलाव होना एक आवश्यकता आधारित कार्यक्रम है। प्रतिस्पर्धा की दौड़ में अपना वाजूद साबित करने के लिए शिक्षक शिक्षा का पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों तथा समस्त प्रकार की शिक्षण व्यवस्था में सामंजस्य स्थापित करने के लिए नवाचारों पर आधारित शिक्षण प्रक्रियाओं को अपनाने के प्रभावपूर्ण अवसरों की पर्याप्तता अनिवार्य कदम होगा। शिक्षक–शिक्षा की गुणवत्ता में सेवापूर्व तथा सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम की विभिन्न चुनौतियाँ है। मध्यप्रदेश के संदर्भ में विश्लेषण करने से यह तथ्य उभर कर आते हैं, कि सेवारत शिक्षण प्रशिक्षण में नवाचारों की चुनौतियों की दशा अधिक अच्छी नहीं है, क्योंकि शिक्षा के पाठ्यक्रम, शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यक्रमों में नवाचारों से जुड़े अनुसंधान, सम्बन्धित साहित्य तथा उन अनुसंधानों का प्रयोग, निर्धारित मानकों, प्रतिबद्धता,उपलब्धि एवं उत्कृष्टता की कसौटी पर संतोषजनक परिणाम प्राप्त नहीं होते। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (NCTE) एवं राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् (NAAC) के मध्य संयुक्त रणनीति को स्वीकार किये जाने तथा अध्यापक शिक्षा संस्थनों द्वारा इनकी परिधि में मूल्यांकन कराये जाने के बावजूद भी गुणवत्ता के स्तर पर संतोषप्रद स्थिति नहीं है। किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम का महत्वपूर्ण तत्व शिक्षा होता है और शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम और उसकी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। शिक्षक शिक्षा में नवाचारों की आवश्यकता न केवल शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता के लिए अपेक्षित हैं वरन् विज्ञान की उन्नति के कारण प्रतिस्पर्द्धा में अपने अस्तित्व को बनाये रखने के लिए तथा उभरती प्रतिभाओं के बेहतर प्रदर्शन के लिए भी शिक्षकों का प्रभावीपूर्ण तरीके से योग्य एवं कुशल होना आवश्यक चुनौती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल रीवा जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध का अध्ययन का आकंलन किया जा सकेगा तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार महाविद्यालयीन स्तर पर योजना के क्रियान्वयन को प्रभावी ढंग से विकसित करने

में समर्थ हो सकता है। शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों में आयोजित किए जाने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों में मौलिक कर्तव्यों से संबंधित पाठ्यक्रम के बारे में जानकारी प्राप्त करना है। मौलिक कर्तव्यों का ज्ञान एवं उसका पालन करने की आदत का विकास छात्राध्यापकों में करना प्रशिक्षकों के दायित्व की दृष्टि से अत्यावश्यक नजर आता है। इसके लिए वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम व कार्यक्रम में सकारात्मक परिवर्तन करके आदर्श नागरिकों के निर्माण हेतु भावी अध्यापकों को सुयोग्य नागरिक बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है:–

1. शोध क्षेत्र के शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध का अध्ययन करना।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

परिकल्पना शोध समस्या एवं समस्या समाधान के बीच की कड़ी है। परिकल्पनाा से तात्पर्य है कि किसी भी समस्या के हल के बारे में पूर्वानुमान लगाना। परिकल्पना एक ऐसा पूर्व विचार है, जो किसी सामान्य के संबंध में बना लिया जाता है और जिसकी सार्थकता की परीक्षा के लिए आवश्यक तथ्यों को एकत्रित किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् है:–

1. "शोध क्षेत्र के शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में वृद्धि हो रही है।"
2. "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला रीवा है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – रीवा, रायपुर कर्चुचिलयान, सिरमौर, जवा, हनुमना, गंगेव, त्यौथर, नईगढ़ी एवं मऊगंज हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित शिक्षक महाविद्यालय इस अध्ययन में सम्मिलित किए गए है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तुत शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। शोध अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया गया है –

6.1 सर्वेक्षण विधि – प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 साक्षात्कार विधि शोध क्षेत्र रीवा जिले में शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध का अध्ययन की ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न प्राचार्य, शिक्षक तथा प्रशिक्षणार्थियों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.3 सांख्यिकी विधि – प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

सूचना या आंकड़े प्राप्त करने हेतु प्रयुक्त किये जाने वाले उपकरण –

1. साक्षात्कार अनुसूची
2. प्रश्नावली पत्रक

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। न्यादर्श के रूप में चयनित रीवा जिले के सभी विकासखण्डों से 2–2 शिक्षा महाविद्यालय कुल 18 महाविद्यालयों, महाविद्यालयों से 5–5 शिक्षक कुल 90 शिक्षक, प्रत्येक महाविद्यालय के प्राचार्य तथा प्रत्येक महाविद्यालय से 10–10 महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थी कुल 360 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध का अध्ययन की स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989)[1], खरवार, मनोज कुमार (2022)[2], कपिल, एच.के. (1996)[3], खुल्लर, के.के. (1988)[4], भाई योगेन्द्रजीत (2014–15)[5], कुमार, डॉ. अमित (2015)[6], शर्मा, नेहा एवं शर्मा, डॉ. निशा (2019)[7], श्रीवास्तव, ए.बी.एल. (1999)[8], सेठी, महेंद्रनाथ (2001)[9]।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जिला रीवा मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी कोने में स्थित है। रीवा का नामकरण नर्मदा नदी के दूसरे नाम 'रेवा' पर आधारित है। रीवा नगर का नाम पहले शायद 'रेवा' रखा गया था। उसी का बिगड़ा रूप अब रीवा बन गया है। इसके उत्तर में उत्तर प्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व तथा पूर्व–उत्तर में उत्तर प्रदेश का ही मिर्जापुर जिला, दक्षिण में अपने राज्य का सीधी जिला और दक्षिण–पश्चिम तथा पश्चिम में सतना जिला है। इसका आकार लगभग त्रिभुज के समान है। इसका विस्तार 24.18^0 उत्तरी अक्षांश से 25^0 उत्तरी अक्षांश तथा 81.2^0 पूर्वी देक्षांश से 82.18^0 पूर्वी देक्षांश के मध्य है। रीवा जिले का क्षेत्रफल 6287 वर्ग किलोमीटर है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या:

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी

प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1: "शोध क्षेत्र के शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में वृद्धि हो रही है।"

सारणी क्रमांक 1: शोध क्षेत्र के शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित	न्यादर्श में चयनित संख्या	शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में वृद्धि					
			हो रही है		नही हो रही है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	18	15	83ण्33	3	16ण्67	00	00
2.	शिक्षक	90	62	68ण्89	16	17ण्78	12	13ण्33
3.	प्रशिक्षणार्थी	360	259	71ण्94	49	13ण्61	52	14ण्44
योग		468	336	71ण्79	68	14ण्53	64	13ण्68
काई वर्ग ;χ^2द्ध			$\chi^2 = 311.59$					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंश 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में शोध क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से न्यादर्श में चयनित 02–02 प्राचार्यों, कुल मिलाकर 18 प्राचार्यों, 10–10 शिक्षकों कुल 90 शिक्षक और इसी प्रकार 40–40 प्रशिक्षणार्थी कुल 360 प्रशिक्षणार्थियों से शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध से सम्बंधी जानकारियों का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते हैं, कि शोध क्षेत्र के 83.33 प्रतिशत प्राचार्य, 68.89 प्रतिशत शिक्षक व 71.94 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों का अभिमत है कि शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में वृद्धि हो रही है।

न्यादर्श में चयनित कुल 468 अभिमतदाताओं में से 71.79 प्रतिशत अभिमत है कि शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में वृद्धि हो रही है, 14.53 प्रतिशत अभिमत है कि शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में वृद्धि नहीं हो रही है, जबकि 13.68 प्रतिशत अभिमत है कि इस संबंध में पता नही।

इसी प्रकार तीनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 311.59 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है। अतः उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में वृद्धि हो रही है। अतः परिकल्पना स्वीकृति होती है।

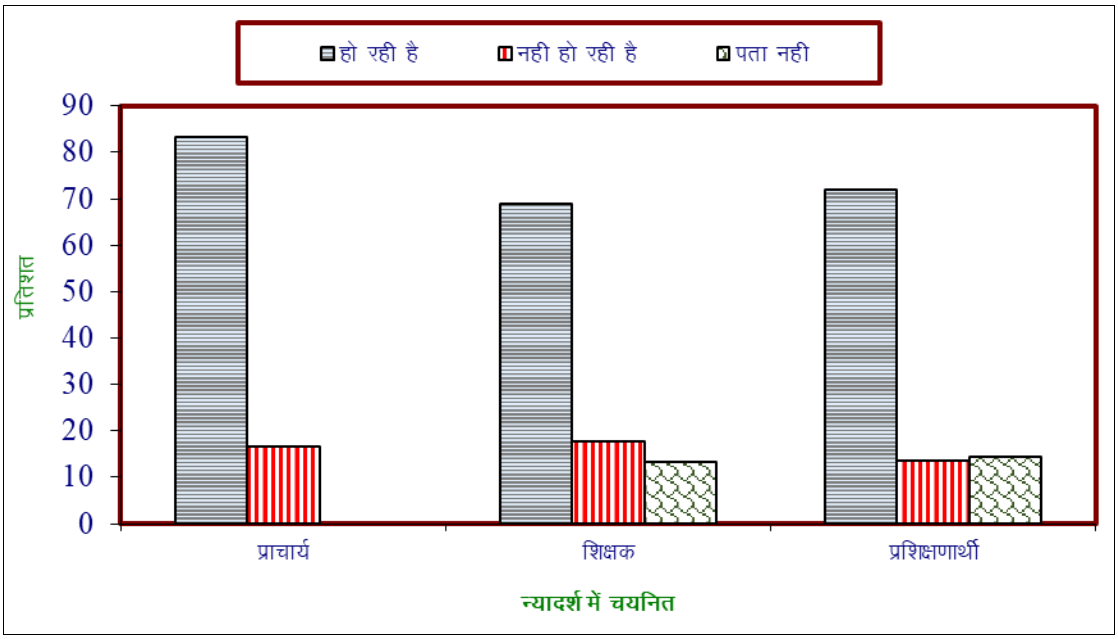

आरेख क्र. 1: शोध क्षेत्र के शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध का अध्ययन

परिकल्पना क्र. 2: "शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी क्रमांक 2: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध का तुलनात्मक अध्ययन

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (N)		45	45
मध्यमान (M)		27.22	28.33
मानक विचलन (SD)		11.33	12.11
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		0.44	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नहीं है	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$

$df = (45-1) + (45-1) = 44 + 44 = 88$

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध से सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में सार्थकता का औसत उपलब्धि 27.22 है तथा मानक विचलन 11.33 है और शहरी शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में सार्थकता का औसत उपलब्धि 28.33 है तथा मानक विचलन 12.11 है।

88 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.74 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त श्जश का मान 0.44 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः ग्रामीण व शहरी शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना क्र. 2 स्वीकृत होती है।

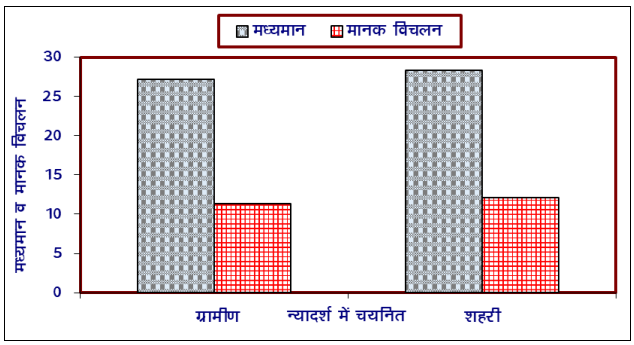

आरेख क्र. 2: शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध का तुलनात्मक अध्ययन

निष्कर्ष

शोध क्षेत्र के 83.33 प्रतिशत प्राचार्य, 68.89 प्रतिशत शिक्षक व 71. 94 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों का अभिमत है कि शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित ननवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में वृद्धि हो रही है। ग्रामीण व शहरी शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में आयोजित नवाचार प्रशिक्षण के फलस्वरूप शिक्षकों के दायित्व बोध में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, आर. एवं अरीना, विपिन (1989): मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन व मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा.
2. खरवार, मनोज कुमार : शिक्षक शिक्षा में नवाचार की भूमिका पर अध्ययन, Anthology The Research, 2022, 7(1).
3. कपिल, एच. के.: सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा. 1996
4. खुल्लर, के.के. राष्ट्रीय शिक्षा नीति, नई दिल्ली विज्ञापन एवं दृष्य प्रसार निर्देशालय. 1988:
5. भाई योगेन्द्रजीतः शिक्षा में नवाचार एवं नवीन प्रवृत्तियाँ. 2014–15.
6. कुमार, डॉ. अमितः भारतीय शिक्षक शिक्षा में अभिनव दृष्टिकोणः 2015, 5.
7. शर्मा, नेहा एवं शर्मा, डॉ. निशाः शिक्षक शिक्षा में नवाचार की भूमिका, Chetana, International Education Journal. 2019;4(3):62-64.
8. श्रीवास्तव, ए.बी.एल. (1999): स्टडी ऑफ सपोर्ट सिस्टम एंड प्रोसेस भिच अंडरपिंस डी.पी.ई.पी. पेडागॉजिकल स्ट्रेटजी इन सिक्स स्टेट्सः ए सिंथेसिस रिपोर्ट, एड. सिलः नयी दिल्ली।
9. सेठी, महेंद्रनाथ (2001): 'ए स्टडी ऑफ मैनेजमैंट ऑफ मल्टीग्रेड टीचिंग प्रैक्टिस' इन प्राइमरी स्कूल ऑफ क्योंझार डिस्ट्रिक्ट एण्ड, इट्स इम्पैक्ट ऑफ़ टीचर ट्रेनिंग ऑन मल्टीग्रेड, उड़ीसा, डी.पी.ई.पी., डी.आई.ई.पी. क्योंझार.